गुरु नानक - सबद ७८

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥

रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५५

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥
सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥
सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥
नावै अंदरि हउ वसाँ नाउ वसै मनि आइ ॥५॥
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥
तूँहै साजनु तूँ सुजाणु तूँ आपे मेलणहारु ॥
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥
तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥

हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥

सार: आग की ओर आकर्षित होने वाले पतंगे की तरह, हम अक्सर उन इच्छाओं का शिकार हो जाते हैं जो अंततः हमें भस्म कर देती हैं। इनका पीछा करते हुए हम क्षणभंगुर भ्रमों को स्थायी प्रकाश समझ लेते हैं जो हमें खोखला और हमारी आत्मा को कुंद कर देते हैं। सबसे बुद्धिमान ज्ञानी व्यक्ति भी इसके लालच में आकर लड़खड़ा सकता है। यह पतन दर्शाता है कि न धन, न शक्ति, न ही ज्ञान, हमें विवेक के क्षरण से बचा सकते हैं। केवल आत्म-जागरूकता ही हमें वास्तविकता की ओर लौटा सकती है और हमें संतुलन पुनः स्थापित करने में मदद कर सकती है। जब भ्रम का पर्दा हटता है तब हम संतोष की उस शांत चमक को पुनः खोज लेते हैं जो हमेशा से हमारे भीतर प्रकाशित रही है।

मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥
समुद्र की खारी, अथाह गहराई में मछली को जाल का एहसास नहीं होता। यह एक ऐसे जीवन का प्रतीक है जो इच्छाओं और भ्रमों में उलझा हुआ है और उसके परिणामों से अनजान है।

अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥
अत्यंत बुद्धिमान होकर भी माया के छल में फँसा, उसने क्यों विश्वास किया? यह प्रश्न इसपर प्रकाश डालता है कि लालच किसी को आंतरिक पतन से नहीं बचा सकता।

कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥
जैसे मछली जाल में फँस जाती है उसी तरह मनुष्य भी अज्ञानतावश आध्यात्मिक मृत्यु के जाल में जा सकता है। आत्म-जागरूकता के बिना हम आसानी से अहंकार और इच्छा के जाल में उलझ जाते हैं। (१)

भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥
हे साथी, ध्यान रखो कि मृत्यु हमेशा हमारे सिर पर मंडराती रहती है। यह विचार हमें स्मरण कराता है कि जीवन की अनिश्चितता के लिए हमें सजग सचेतना और विनम्र स्वभाव रखने की आवश्यकता है।

जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे मछली अनजाने में जाल में फँस जाती है उसी तरह मनुष्य भी अज्ञानतावश आध्यात्मिक मृत्यु के जाल में फँस सकता है। आत्म-जागरूकता के बिना हम अपने अहंकार और इच्छाओं में उलझ सकते हैं। (१)(विराम)

सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥
सारा संसार अस्तित्व के सार को समझे बिना समय के बंधन में बंधा हुआ है। यह काल असहनीय लगता है।

सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥
सच्चाई में डूबे लोगों को द्विविधाओं और नकारात्मक विचारों से मुक्ति मिलती है।

हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥
उन लोगों के प्रति समर्पित बलिहारी जाता हूं जो अपनी भीतरी वास्तविकता के प्रति सच्चे रहते हैं और निष्ठावान हैं। उनका प्रामाणिक जीवन की तरफ यह आचरण और प्रतिबद्धता दूसरों को भी ईमानदारी अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। (२)

सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥
जैसे बाज़ पक्षी का शिकार करता है वैसे ही शिकारी शिकार को पकड़ने के लिए जाल डालता है। यह उदाहरण दर्शाता है कि यदि परिणामों पर गंभीरता से विचार न किया जाए तब प्रलोभन जाल बन सकते हैं।

गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥
जो लोग ज्ञान के सार को धारण करते हैं वह प्रबुद्ध हो जाते हैं जबकि अन्य प्रलोभनों में फँस जाते हैं। यह अहसास कराता है कि आत्म-चिंतन की कमी आध्यात्मिक पतन का कारण बन सकती है।

बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥
चिंतन के अभाव के कारण उन्हें उठाकर फेंक दिया जाता है, उनका साथ कोई नहीं देता। लाक्षणिक रूप से यह अज्ञानता को एक दंड के रूप में दर्शाता है क्योंकि जागरूकता का अभाव व्यक्ति को आध्यात्मिक सहारे से वंचित कर देता है। (३)

सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥
जो सत्यनिष्ठ होते हैं वह सत्य को स्वीकार करते हैं, उनके लिए सत्य ही उनका सच्चा निवास है। यह प्रकाश डालता है कि एकता की वास्तविकता के साथ जुड़ने से ऐसी मानसिकता विकसित होती है जो एकता को पोषित करती है।

जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥
जो सर्वव्यापी ऊर्जा की वास्तविकता को पहचानते हैं वह सच्चे मनन द्वारा उसे स्वीकार करते हैं। यह प्रकाश डालता है कि केवल व्यक्तिगत प्रयास और अनुभव ही सार्थक अंतर्दृष्टि की ओर ले जा सकते हैं।

मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥
आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध लोगों के मन और वचन उनके गहन ज्ञान से उत्पन्न पवित्रता को दर्शाते हैं। (४)

सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥
अज्ञान से जागरूकता की ओर मार्गदर्शन करने वाले सच्चे ज्ञान के समक्ष प्रार्थना करें और प्रियतम के साथ एक होने का प्रयास करें। यह अपने अंतःकरण जो सच्चा और शाश्वत साथी है, के साथ एकता की एक विनम्र खोज है।

साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥
पुण्यात्मा, सकारात्मकता को अपनाकर शांति प्राप्त करते हैं और विनाशकारी इरादों के लोग आध्यात्मिक रूप से नकारात्मकता में लीन होकर नष्ट हो जाते हैं।

नावै अंदरि हउ वसाँ नाउ वसै मनि आइ ॥५॥
मैं चिंतन करता हूँ और आत्म-चिंतन मेरे मन में निवास करने लगा है। यह परिदृश्य प्रकट करता है कि सकारात्मक इरादे सचेतन कार्य करने की आदत बन जाते हैं। (५)

बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥
जागरूकता के प्रकाशस्तंभ के रूप में कार्य करने वाले ज्ञान के बिना, अज्ञान का अंधकार है। आध्यात्मिक संवाद के बिना हम ज्ञान के सार को नहीं समझ सकते।

गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥
जब ज्ञान की ज्योति प्रकट होती है तब व्यक्ति सत्य के सार के चिंतन में लीन रहता है।

तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥
जहाँ व्यक्ति का विवेक सार्वभौमिक चेतना के साथ विलीन हो जाता है वहाँ समय काल की अवधारणा मौजूद नहीं रहती। यह जागरूकता की ऐसी अवस्था को दर्शाता है जहाँ एकता की भावना नश्वरता की चिंताओं का स्थान ले लेती है। (६)

तूँहै साजनु तूँ सुजाणु तूँ आपे मेलणहारु ॥
आप साथी हैं, आप सर्वज्ञ हैं, आप एकीकृत शक्ति हैं, यह विशेषताएं सर्वव्यापी सार्वभौमिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं।

गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥
आंतरिक ज्ञान को महत्व दें जो अंतर्दृष्टि व्यक्त करता है, इसकी गहराई की कोई सीमा या अंत नहीं है।

तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥
जहाँ अंतर्दृष्टि का एक आंतरिक ज्ञान है, वह क्षेत्र विनाश से अछूता रहता है और अनंत रूप से प्रवाहित होता है। (७)

हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥
प्रकृति की चाह से ही सब कुछ अस्तित्व में आता है और सार्वभौमिक नियमों के अनुसार ही सृष्टि क्रिया करती है।

हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥
प्रकृति के नियम समय को नियंत्रित करते हैं और इस सार्वभौमिक सिद्धांत में अस्तित्व का सत्य निहित है। यह दर्शाता है कि जीवन, जन्म से लेकर घटनाओं और मृत्यु तक, एक बड़े नियम का हिस्सा है जो व्यक्तिगत इच्छा से परे है।

नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥
नानक कहते हैं कि जो कुछ भी सार्वभौमिक नियमों के लिए उपयुक्त है वह स्वाभाविक रूप से होता है, कोई भी प्राणी इन प्राकृतिक प्रक्रियाओं में किसी को भी नियंत्रित नहीं कर सकता है। (८)(४)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि अस्तित्व में हर चीज़ ब्रह्मांड के प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलती है और अपनी लय में सहजता से प्रकट होती है। सूर्योदय, नदियों का प्रवाह और फूलों का खिलना, यह सभी इसी अंतर्निहित क्रम का पालन करते हैं। वह हमें याद दिलाते हैं कि कोई भी शक्ति, अधिकार या इच्छा जीवन को बनाए रखने वाली इन गहन प्रक्रियाओं को नहीं बदल सकती। जब हम स्वयं को इस प्राकृतिक प्रवाह के साथ सामंजस्य में लाते हैं तब हम समझते हैं कि हम इस प्रवाह के भागीदार हैं, नियंत्रक नहीं। यह सामंजस्य हमें विनम्रता विकसित करने में मदद करता है जिससे जीवन की स्वाभाविक प्रगति के उतार-चढ़ाव के प्रति हमारा प्रतिरोध कम करता है।

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com